प्रकाशनार्थ

पटना, 15 सितंबर। विश्व ओज़ोन दिवस के उपलक्ष्य में आज आद्री में आयोजित एक कार्यक्रम में बोलते हुए तरुमित्रा के निदेशक, फादर टोनी पेंडानाथ, एस.जे., ने पर्यावरण पर ज़ोर दे कर कहा कि अगर हम प्रकृति के करीब जीवन जीएँ तो हम बीमार नहीं पड़ेंगे। उन्होंने औषधि के रूप में हर्बल पौधों के उपयोग का सुझाव दिया क्योंकि इनका शरीर पर कोई दुष्प्रभाव नहीं होता| ये पौधे तरुमित्रा में भी पाए जाते हैं। यह कार्यक्रम एशियाई विकास अनुसंधान संस्थान (आद्री) के पर्यावरण एवं जलवायु अध्ययन केंद्र (सीएसईसी/ CSEC) में ईआईएसीपी द्वारा आयोजित किया गया था।

कार्यक्रम के दौरान फादर टोनी ने CSEC की *वार्षिक रिपोर्ट 2024-25* भी जारी की। इस अवसर पर CSEC-ADRI के डॉ. सुनील गुप्ता ने बताया कि रिपोर्ट में पटना को ठोस अपशिष्ट प्रबंधन के लिए इंदौर तथा दक्षिण भारतीय शहर – जैसे चेन्नई और मदुरै – के मॉडल अपनाने की सिफारिश की गई है।

फादर पेंडानाथ ने सतत विकास की प्राप्ति के लिए मधुमक्खी पालन (एपिकल्चर), बागवानी (हॉर्टिकल्चर) आदि के अभ्यास पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने यह भी बताया कि उनके 8 एकड़ जैव-आरक्षित क्षेत्र में 450 से अधिक औषधीय पौधों की प्रजातियाँ पाई जाती हैं। उन्होंने इस बात पर संतोष व्यक्त किया कि फ्रिज, एयर कंडीशनर आदि में प्रयुक्त सीएफसी केमिकल के कारण उत्पन्न ओज़ोन छिद्र की समस्या को अब काफी हद तक नियंत्रित कर लिया गया है।

इसके बाद CSEC-ADRI में ईआईएसीपी के आईटी अधिकारी गुलशन पटेल ने ओज़ोन छिद्र की कहानी–इसके आरंभ से लेकर वर्तमान तक–का विवरण प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि यह सभी देशों के लिए एक बड़ी उपलब्धि है कि उन्होंने एकजुट होकर इस समस्या का समाधान किया। उन्होंने इसे भविष्य में जलवायु परिवर्तन संकट के समाधान की दिशा में एक पूर्वाभास बताया। जनता के लिए आवश्यक कार्यों का उल्लेख करते हुए उन्होंने जागरूकता अभियान चलाने, कचरा प्रबंधन, प्रदूषण नियंत्रण और सार्वजनिक परिवहन के समर्थन जैसे उपाय सुझाए।

CSEC-ADRI की शोध प्रमुख एवं ईआईएसीपी समन्वयक डॉ. मौसुमी गुप्ता ने फादर टोनी पेंडानाथ का स्वागत किया, जिन्होंने इस अवसर पर आद्री परिसर में एक पौधा भी रोपा। इस मौके पर CSEC-ADRI की सुश्री पूजा कुमारी भी उपस्थित थीं।

(Abhishek Prasad)